प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

पॉपकार्न की खेती से होगी किसानों की आय दोगुनी- डा. भटनागर

पंतनगर। 28 जून 2019। किसान सामान्य मक्के के स्थान पर पॉपकार्न मक्के की खेती करते हैं तो वे एक निश्चित क्षेत्र से सामान्य मक्के से लगभग दोगुना लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यह कहना है पंतनगर के कृषि महाविद्यालय के सस्य विज्ञान के वैज्ञानिक, डा. अमित भटनागर, का। उन्होंने बताया कि पॉपकार्न मक्के की बुवाई सामान्यतः जून के द्वितीय पखवाड़े से जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक कर सकते हैं, किन्तु उन्होंने सलाह दी कि जो किसान इसकी बुवाई करना चाहते हैं वे 10 जुलाई तक इसकी बुवाई अवश्य कर लें। पॉपकार्न के लिए किसान को इसकी अम्बर पॉपकार्न एवं पर्ल पॉपकार्न प्रजातियों का चुनाव करना चाहिए तथा बीज की 12–14 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से बुवाई करनी चाहिए।

डा. भटनागर ने बताया कि पॉपकार्न की खेती के लिए ऐसे खेत का चुनाव किया जाना चाहिए जहां जल भराव की समस्या ना हो। बुवाई से पूर्व खेत की 3–4 बार हैरो से जुताई करके तैयार कर लेना चाहिए फिर इसमें 120 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस व 40 कि.ग्रा. पोटाश के साथ 20 से 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट का प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने बताया कि खेत तैयार हो जाने के बाद 60 से.मी की दूरी पर मेड़ बनाकर 20 से 25 से.मी. की दूरी पर बीजों की बुवाई करनी चाहिए। मेड़ों पर बुवाई करने से बरसात में जल भराव की समस्या से फसल को काफी हद तक बचाया जा सकता है।

डा. भटनागर ने सुझाव दिया कि खरपतवारों के नियंत्रण के लिए पहली निराई-गुड़ाई बुवाई के 15 से 20 दिन तथा दूसरी 30 से 35 दिन बाद करनी चाहिए। निराई-गुड़ाई न हो पाने की अवस्था में बुवाई के 2–3 दिन के अंदर एट्राजीन शाकनाशी की 60 ग्राम मात्रा प्रति टंकी नेपसेक की दर से प्रयोग करने पर शुरूआती दिनों में उगने वाले खरपतवारों का काफी हद तक नियंत्रण किया जा सकता है। इसके बाद 20 से 25 दिन के उपरान्त टेम्बोट्राइओन की 8.5 मि.ली. मात्रा प्रति टंकी नेपसेक की दर से छिड़काव करने पर सभी खरपतवारों का नियंत्रण हो जाता है। सिंचाई के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि खरीफ में पर्याप्त वर्षा होने पर सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है, परन्तु वर्षा की कमी में मक्के की कुछ क्रांतिक अवस्थाओं पर सिंचाई अवश्य कर देनी चाहिए, जिसमें 3–4 पत्ती की अवस्था, घुटनों की ऊंचाई की अवस्था एवं पुष्प आने की अवस्थाएं प्रमुख हैं। डा. भटनागर ने बताया कि अगर किसान इन वैज्ञानिक संस्तुतियों के अनुसार पॉपकार्न की खेती करते हैं तो वे पॉपकार्न मक्के का 30–35 कुन्तल प्रति हैक्टर की दर से उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं, जिसमें लागत लगभग 25 से 30 हजार रूपये आती है और रूपये प्रति कि.ग्रा. की दर से पॉपकार्न मक्का के दाने बेचकर किसान कुल सवा से डेढ़ लाख रूपये प्रति हैक्टर की शुद्ध आय प्राप्त कर सकते हैं। यह शुद्ध आय सामान्य दाने वाली मक्के की अपेक्षा दोगुना है। भविष्य में पॉपकार्न की खेती किसानों के लिए फायदे का सौदा साबित होगी।

पॉपकार्न मक्का।